8/10/1966 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं.....

ओमशांति! इस गीत के एक लाइन ने (खबर)दार कर दिया। क्या कहा इस लाइन ने? कहा– हम तीर्थ यात्रा पर हैं और हमारी ये यात्रा सबसे न्यारी है। उस(इस) यात्रा को भूलो मत। यात्रा को भूल जाते हैं; क्योंकि इस यात्रा पर ही सारा मदार है। वो तो बिचारे जिस्मानी यात्रा पर जा करके, फिर लौट करके घर में आ जाते हैं और जन्म–जन्मांतर ये यात्रा करते आए हैं और तुम बच्चों को सिर्फ ये एक गीत की लाइन. ..बिल्कुल सावधान कर देती है कि हमारे तीर्थ उन मिसल नहीं हैं जो धक्का खा करके फिर भी मृत्युलोक में आना, अमरनाथ जा करके फिर भी मृत्युलोक में आना, बद्रीनाथ जा करके फिर भी मृत्युलोक में आना, घर में आना यानी आ करके विकार में पड़ना– तुम्हारी ये यात्राएँ नहीं हैं। मनुष्य के ही यात्रा है। तीर्थ पर जाते हैं, चक्कर लगाकर फिर गटर में; फिर चक्कर लगाकर, फिर गटर में; यहाँ–वहाँ जा करके फिर गटर में। बाप कहते हैं तुम्हारी यात्रा (...)। यात्राएँ तो बहुत होती हैं ना बच्चे। किस्म–2 की यात्राएँ (हैं) इनकी। देवी–देवताओं के मंदिर अथाह हैं, जिन पर ये गांवड़े–वावड़े वाले, हैं विकारियों के संग में, वो यात्राओं पर जाते हैं। तो वो विकारी हैं ना बच्चे और तुम बच्चे तो प्रण किए हुए हैं निर्विकारी रहने का और फिर तुम्हारी निर्विकारियों की यात्रा ही है, जो एवर निर्विकारी बाप है, उनको याद करना। पानी के सागर को ये निर्विकारी या विकारी नहीं कहेंगे। न फिर उनसे निकली हुईं कोई गंगाएँ–वंगाएँ वगैरह, जो कोई वो विकारी को निर्विकारी बनाएँगी। ये तो कायदा नहीं है। ये तो कोई जंगली को भी समझाओ तो भी झट समझ जाए। पर ये मनुष्य मात्र इतने तो जंगली हैं बिल्कुल ही, जिनको कितना भी समझाओ, भूल जाते हैं। कि यात्रा पर हो, यात्रा को भूल जाते हैं। अभी यात्रा को तो कभी कोई भूले नहीं। यात्रा पर अगर ठहर जावें, तो कहाँ पहाड़ों के बीच में बैठ जाएगा? नहीं, चलते ही जाते हैं। वो है अल्प काल क्षणभंगुर की यात्रा और ये है बड़ी यात्रा। तो तुम बच्चों का सारा मदार, उठते,बैठते,चलते,खाते,पीते यात्रा का ख्याल करना है, और सब बातें भूल जानी हैं। जब यात्रा में जाते हैं तो धंधा–धोरी, गृहस्थ–व्यवहार ये सभी भूलना होता है; क्योंकि एक को याद करना है। जाते हैं अमरनाथ कि बस, अमरनाथ की जय, अमरनाथ की जय। बद्रीनाथ की जय, बस, ऐसे ही कहते जाते हैं; परन्तु वो जा करके ये महीना, डेढ़ महीना, दो महीना... फिर आ करके ये 12 महीना फिर गंद में पड़ते हैं मृत्युलोक में। विकार में जाते हैं। फिर चलो ये यात्राओं के ऊपर। ऐसे तो नहीं कि रोज़–2 (...)। गंगा में पतित–पावन बनाने जाते हैं, स्नान करने और उनको ये मालूम नहीं है कि हम रोज़ पतित होते हैं। समझा ना! रोज़ पतित होते हैं गंगा पर रहने वाले भी, जमुना पर रहने वाले भी। रोज़ पतित होते हैं, रोज़ गंगा में स्नान करते हैं–2। जो–2 भी बनारस में या हरिद्वार में या ऐसे–2 दिल्ली में, कितने स्नान करने जाते हैं। एक तो नेम होता है उनका यात्रा का, स्नान करने का, एक तो बड़े दिन होते हैं तो जाते हैं। तो तुम बच्चे जानते हो कि ये इसी ही ख्याल जाते हैं कि हम गंगा में स्नान करने जाते हैं, ये पतित–पावनी है। ऐसे नहीं है कि कोई खास एक दिन वो पतितों को पावन बनाने वाली बनती है, फिर कभी बनती नहीं है। ऐसा नहीं है कि जब कोई मेला लगता है, कोई भी– ये पूर्णमासी का .... या फलाना का, उस समय वो पतित–पावनी बन जाती है, पीछे नहीं बनती है। नहीं, है तो है ही है। तो फिर रोज़ भी तो जाते हैं ना उसमें स्नान करने। तो फिर जब रोज़ भी जाते हैं स्नान करने और फिर खास दिन के ऊपर भी जाते हैं और फिर जभी मेला लगते हैं ये कुम्भ का या वगैरह का, वो जाते हैं, कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। गंगा तो चीज़ वही है। जमुना भी तो चीज़ वही है। उसमें वो मुर्दे भी तो डाल देते हैं। उसमें मुर्दे भी डाल देते हैं, देखो। तो ये सब बातों को समझने से, इन सब बातों से

बाबा नफरत दिलाते हैं कि बच्चे, अभी तुम बच्चों को यात्रा पर बुद्धि का योग लगाना है कि हम अभी जाते हैं घर यानी शांतिधाम। उसमें कोई स्नान करने की, कोई बात करने की, कुछ भी दरकार नहीं, न शास्त्र पढ़ने–करने की। सिर्फ बाप बैठ करके समझाते हैं; क्योंकि पतित–पावनी (...)। आ करके युक्ति बताते हैं और लाते हैं एक दफा। सारी दुनिया भी पतित से पावन होती है एक दफा। ...कहते हैं मैं आता ही हूँ एक दफा। ये भी मनुष्य के बुद्धि में है ज़रूर कि कलहयुग पुरानी दुनिया है, सतयुग नई दुनिया है और ज़रूर पुरानी दुनिया बदल करके नई दुनिया होती है, उस समय में बाप को आना है ज़रूर; क्योंकि नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराना ये उनका काम है। गायन है, चित्र हैं उनके; परन्तु वे इतने मूढ़बुद्धि बन गए हैं, माया ने इतने ही तमोप्रधान बुद्धि बनाई है, कुछ नहीं समझते हैं। देखो, कितनी तुमको मेहनत करनी पड़ती है। प्रदर्शनियों में कितने बड़े–2 आदमी आते हैं। आगे चल करके ये सभी संन्यासी लोग भी आने लग पड़ेंगे। ऐसे मत समझो, नहीं आएँगे; परन्तु समझेगा फिर भी कोई कोटन में कोउ। कोउ में कोउ, कोउ में कोउ, ये जो गाया हुआ है ना। तो जब कहा जाता है कि कोटन में कोउ, तो समझाते हैं तब तो कहा जाता है ना भई– कोटों को समझाते हैं, लाखों को, करोड़ों को, उनमें कोई समझते हैं। तो समझाते हो ना। करोड़ों को, कितने को समझाया होगा! लाखों को, ढेर को तो समझाया होगा और ये समझते हो, बहुतों को समझाना होगा। बहुत चारों तरफ में तुम समझाते ही रहेंगे। आखरीन में तुम्हारी ये समझा(नी) अख़बारों में भी पड़ेगी। चित्र भी अखबारों में पड़ेंगे। धीरे–2 सब कुछ पड़ेंगे ना बच्ची। ये सीढ़ी जो है ना, ये भी अख़बारों में पड़ेगी; क्योंकि...सीढ़ी तो है सिर्फ भारतवासियों के लिए। फिर पूछेगा तुम्हारे से कि ये इतने जो बाकी धर्म वाले हैं विलायत में वा यहाँ भी, ये सब, वो कहाँ जाएँगे? पर जब यही खतम होते हैं तो उनके साथ वो खतम ही होने का है ज़रूर; क्योंकि ये जब बैठ करके बाप से इनहेरीटेन्स लेते हैं, पुरुषार्थ करते हैं, तो इनको तो चाहिए। बाकी कयामत का समय, सो भी गाया हुआ है कि भई जब पिछाड़ी होती है कि कयामत का, सेग्रिगेशन(पृथक्) का समय होता है। कयामत का कहा जाता है– वापस जाने का। तो वापस तो जाएँगे ही, जब पुरानी दुनिया होगी और नई स्थापन होगी, तब सभी वापस जाएँगे। तो ये समझाते भी रहते हैं कि भई, सबको वापस जाना है यानी विनाश होने का है। गाते भी रहते हैं। गाएँगे भी ज़रूर कि नई दुनिया स्थापन हो रही है, दुनिया बदल रही है। देखो, गीत भी है– दुनिया बदल रही है अर्थात् ये जो पतित दुनिया है, सो बदल करके पावन हो रही है। अभी पावन दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है, पतित दुनिया को नर्क कहा जाता है। अभी गाते भी हैं पतित। सतयुग में ये गायन होता ही नहीं है कि सतयुग पावन दुनिया खतम होती है, पतित आती है। यहाँ ही गाते रहते हैं– दुनिया बदल रही है। अब कौन–सी दुनिया बदल रही है? कलहयुगी पतित दुनिया बदल रही है। अभी ये भी तो समझ की बात है ना। ये भी बाप तुमको समझाते हैं। दुनिया को कोई ये मालूम नहीं है। साधु–संत–महात्मा को ये मालूम नहीं कि दुनिया बदल रही है। कोई भी नहीं जानते हैं सिवाए तुम बच्चों के। तो जबकि दुनिया बदल रही है, तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर ये नर्कवासियों का विनाश और स्वर्गवासियों की स्थापना। अभी स्वर्गवासियों की स्थापना कैसे हो रही है, सो भी तो तुम समझते हो (और) ये भी जानते हो कि कल्प–2 ऐसे ही स्थापना होती है जैसे शुरू हुई है। अभी भी तो बहुत बरस पड़े हैं ना। जितना पीछे इतना सीरियस होती जाती है, इतनी मेहनत, इतनी बहुत को समझानी मिलती जाएगी, बहुत ही प्रदर्शनी होती जाएगी। देखो, दिन–प्रतिदिन वृद्धि को होते जाते हैं ना। कितनी चिट्ठियाँ लिखती हैं– हमको प्रदर्शनी करनी है, हमको प्रदर्शनी करनी है। प्रदर्शनी के भी चित्र बनें और थोड़े राइट चित्र भी बनें। डिफेक्टेड हैं। ...अभी वो बिचारे वहाँ... जो बाबा

उनको बतावे या कोई जागे– बाबा, हमको बताओ, हम सीढ़ी बना करके..., बिल्कुल पाई–पैसे की बात है। बाबा रोज़–2 कहते हैं कि इसमें बारीक बड़ी ये नॉलेज है। वो एकदम, जो भी साधु–सन्त, ये संन्यासी, ये कांग्रेसी वगैरह एकदम शर्मशार हो जाएँगे। ये सीढ़ी सिर्फ ऐसी है; परन्तु बच्चों को कुछ भी बुद्धि में नहीं। ...पारसबुद्धि होनी होती है। सर्विस करने ...। कितने को सर्विस करनी (चाहिए), कितना कल्याण करना चाहिए– बहन का, भाई का, किसका न किसका। उनको सिखलाना चाहिए। अरे भई, हम सतोप्रधान थे। तमोप्रधान बने। अभी सतोप्रधान बनना है। बाबा कहते हैं, सिर्फ बोलते हैं–मन मुझे याद कर। ..... ये गीता में अक्षर हैं ना। सिर्फ ये भगवानुवाच। कृष्ण भगवान को तो नहीं कहा जाता है कभी भी एकदम। जो पूरे 84 जन्म लेते हैं, उनको भगवान कैसे कोई कह सकते हैं! इसको तो भूले–चूके भी (...) और गाते भी हैं– अरे, वो जो कृष्ण था ना सतयुग में, वो जो अन्त का जन्म है, वो सांवरा, गाँवड़े का छोरा, जूती भी उनकी नहीं है, उसकी आत्मा को, जो 84 जन्म भोगती है, वो गाँवड़े का छोरा हो जाते हैं, तमोप्रधान बन जाते हैं एकदम, फिर बाप आ करके उस गाँवड़े के छोरे को (...)। अरे, गाँवड़े का होता है ना। देखो, हमारे पास वो भी देखो गाँवड़े का है ना–विश्वरतन। ये सब गाँवड़े के हैं। ऐसे गाँवड़े के छोरे को, आत्मा है ना बच्ची उनमें (...)। अभी उसकी आत्मा जानती है कि हम तो विश्व के मालिक थे और गाँवड़े के छोरे आ करके बने (हैं)। अभी बड़े बाबा आकर हमको विश्व का मालिक (...), कितनी खुशी होनी चाहिए! कितना दिमाग पूर होना चाहिए! अभी उसके लिए कोई बड़ा कपड़ा ऐसा नहीं पहनना चाहिए, कोई मोह तो नहीं रखना चाहिए। ये गुप्त। वो कहा जाता है– ये जो नशा होता है ना धन का, वो भी कोई मुश्किल ही (...)। ये पहाका देते हैं– एक होते हैं भैंस, दूसरा बाबड़िया। ये सिंध में पहाका होता है...। ये अपना दूध का उनमें नशा वो रख सकते हैं अंदर में। कितना भी धन आए तो उछलते नहीं एकदम; परन्तु तुम्हारे पास कितना धन है। देखो, अथाह धन है! पर तुमको कोई मग़रूरी है कोई किस्म की! कुछ भी नहीं। बिल्कुल सीधे। बाप ही बैठकर देखो, कोई बात की है, कितना निरहंकार! और कितना बुद्धि में रहता है– अरे, कल हम जा करके अपना वो हीरों–जवाहरों का महल बनाते हैं। वो जो पढ़ाई होती है बैरिस्टरों की, उनकी, वो तो इसी जन्म में बोलते हैं– अभी हम इम्तिहान पास करके जाकर बंगला बनाऊँगा और बैरिस्टरी करूँगा, हाईकोर्ट में जाऊँगा या सर्जन बनूँगा, इतना पैसा कमाऊँगा, वगैरह–वगैरह। ऐसे कहते हैं ना बच्ची। अच्छा, धन कमाते हैं– मैं इतने महल बनाऊँगा। अरे, ये तो देखो, हम नई दुनिया में (...), पुरानी दुनिया में नहीं। ये तो गंदी–डर्टी दुनिया है एकदम। देखो, कितने छी–2 जीव–जन्तु, देखो कितने होते हैं गंदे एकदम। हम अभी कल इस ऐसी डर्टी दुनिया से, इसको कहा जाता है– डर्टीएस्ट दुनिया। पुरानी दुनिया है ना भंजू एकदम। सो भी किसकी? मनुष्य की। वो तो जगह होती है, ईंट और वो बने। पर ये मनुष्य जैसे भंजू हो पड़े हैं, वर्थ नॉट ऐ पैनी। इसलिए मनुष्यों को कहा जाता है– ये कौड़ी के भी नहीं हैं। कौड़ी के भी नहीं हैं, उनका देखो कितना मान (है)! ये भले संन्यासी बड़े–2 शंकराचार्य, बड़े–2 वो राजाएँ के इन्सपेक्टर, ये बिल्कुल वर्थ नॉट ऐ कौड़ी। तो वो दिखलाना चाहिए ना उसमें। वहाँ ऊपर में दिखलाना चाहिए– ये हीरे जैसा जीवन, वही 84 जन्म ले करके भई कौड़ी जैसा जीवन, पतित, भ्रष्टाचारी। देखो, नाम कितने डर्टी हैं एकदम। तो क्लीयर लिखना चाहिए। कोई भी आवे तो ये हैं नम्बरवन चित्र। एक ये भी चित्र, दूसरा वो चित्र, उसके सामने एकदम, इकट्ठा लगा हुआ है। अरे भई, देखो ना यहाँ। बाबा ने समझाया ना कि कोई पेंसिल ले करके उसमें लिख देवें, सफेद अक्षर में, लाल अक्षर में– भई, यहाँ 600 करोड़, यहाँ 9 लाख। यहाँ भी तो आते रहते हैं ना बच्चे समझाने के लिए। तो झट जा करके वहाँ लिख देना चाहिए, कभी भी कोई आवे, तो बोलो– देखो, हम जो

कहते हैं ना कि ये 10 बरस में हम श्रेष्ठाचारी (...), ये देखो ना– श्रेष्ठाचारी ये भारत था, कितने मनुष्य होंगे? तुम ख्याल करो, 5000 वर्ष पहले ये कितने इनमें मनुष्य होंगे! अभी कितने मनुष्य हैं– ये विचार करो। ये लड़ाई सामने खड़ी है। देखो, सभी आत्माएँ जा रही हैं ऊपर में मच्छरों के माफिक। सो कोई, ये तो रिपीट..हो रही है ना बरोबर। देखो, यही मूसल हैं ना। यही सब कुछ है, ये आग वगैरह ये सब जगह में। देखो, कितनी आग भड़क रही है! कितना ये बॉम्ब्स तैयार हो रहे हैं! ये कितना वो कोशिश करते हैं कि आपस में शांति–सुलह से रहें। नहीं बिल्कुल, जितना कोशिश करते हैं इतना बिगड़ते जाते हैं और बाबा भी आया हुआ है। अरे, बाबा भी आया हुआ है, राजयोग भी सिखला रहा है, विनाश भी सामने खड़ा है। ये अभी तुम बैठ करके सुनते हो अच्छी तरह से। वण्डर ये है– बस, यहाँ जूती बाहर में पड़ी, तुम्हें अभी जूता वो नहीं है ना, वो चमड़े की जूती भी बाहर में पड़ी ना, ये ज्ञान सब नम्बरवार का उड़ जाता है। जैसे का तैसा एकदम। कुछ भी स्मृति दिन(दिल) में रहती ही नहीं एकदम। अगर स्मृति रहे तो बिचारों को शौक (...)– हम जाऊँ, हम जाकर सर्विस करूँ। बाबा.... हर्षित रहे। इस ज्ञान में बच्ची यहाँ ही हर्षित होना है तब वो 21 जन्म में ऐसे हर्षित रहना होता है। यहाँ इतनी खुशी का पारा (...), अभी खुशी का पारा चढ़ेगा सर्विस पर। तो सर्विस ही क्या करते हैं, देखो। ..... और ये बाबा जानते हैं। ये तो जो जहाँ के आते हैं वो उनको जानते हैं। बाबा तो सभी सेन्टर्स के बच्चों को जानते हैं ना। थोड़ी–सी बात में एकदम तुरछा–तुरछा। अरे अच्छा, कोई–न–कोई भूल की, कोई हर्जा नहीं है, हँसते रहो ड्रामा के प्लैन अनुसार। चलो, मुझे तो सर्विस करनी है ना। ऐसे थोड़े ही है कि इनके कारण मुझे सर्विस कोई छोड़ देनी है। नहीं, रूस करके घर में थोड़े ही बैठ जाना है। नहीं–नहीं। सर्विस तो ज़रूर जा करके (...) सेन्टर में, प्रदर्शनी में, वहाँ–2 जानी है ही और खुशी से। अगर खुशी से न जाएँगे और देखेंगे कि वो जिससे हमारी नहीं पटती है वो सामने खड़ा है तो फंक हो जाते हैं एकदम। समझा ना! जैसे एकदम मूर्छित हो जाते हैं। पीछे सर्विस क्या निकलेगी? जिनकी एक/दो में नहीं पटती है ना, अगर (वो) प्रदर्शनी में गए, एक/दो को.... उड़ जाएगी एकदम; क्योंकि दुश्मन को देखा ना। उनको उनका वो सारा परिचय दिल में आएगा। वो सर्विस पर उनकी दिल नहीं लगेगी। किनारा करते–2, होता है ऐसे बरोबर प्रदर्शनी में? आएँगे, यहाँ–वहाँ देख करके, उनको दिल तो लगेगी नहीं। ..... यहाँ से घुस करके चला जाएगा, देखो। बाबा को समाचार तो सब आते हैं ना। ऐसे तो नहीं है, सभी का समाचार नहीं आते हैं। सभी सेन्टर में देखो, ऐसे बहुत देखे जिनका मुथ न मिले दूसरे से। ऐसे तो होता ही नहीं है ना। वो तो फिर जैसे वो अज्ञानी जीव, तैसे वो अज्ञानी, उनमें फर्क ही क्या रहा! ...महारथी कहेंगे? नहीं, वो ग्रहचारी के अंदर। ज्ञान बहुत है, पर ग्रहचारी आकर बैठी है देहअभिमान की। फिर ग्रहचारी देहअभिमान की किसे न किसको (...)। पहले नम्बर की बीमारी है ये देहअभिमान की और यही बाबा मत्था मार रहे हैं– अरे बच्चों, आत्मअभिमानी बनो और ये प्यार समझो कि हमको परमात्मा आकर पढ़ाते हैं। परमात्मा और सभी आत्माएँ ही सब कुछ करती हैं। आत्मा चलती है, आत्मा विकारी बनती है, आत्मा निर्विकारी बनती है। देखो, है ना बरोबर। तुम आत्मा निर्विकारी थीं, विश्व के मालिक थे। फिर रावण के राज्य में तुम्हारी आत्मा ही विकारी बन गई हैं, जो अपन को कहते भी आए हो– हम विकारी, ये निर्विकारी। अपने ही आपको (...)। ड्रामा ही ऐसे बना हुआ है ना। 84 जन्मों का जो ड्रामा, अगर सदैव 84 जन्म उनका पावन हो तो फिर पुकार कहाँ से निकले– हे पतित–पावन, आओ। ज़रूर वही विकारी (...)। वो निर्विकारी सो विकारी बनते हैं। ये तो कोई के भी बुद्धि में बिल्कुल नहीं कि हम कोई निर्विकारी थे और विकारी बने। किसको भी, एक मनुष्य मात्र को नहीं कि हम कोई समय में निर्विकारी थे और विकारी बने हैं। ये भी किसको

बुद्धि में नहीं– हम आत्माएँ रहने वाली तो फिर भी मूलवतन की हैं ना। निराकारी दुनिया ना, वहाँ तो हम आत्मा निर्विकारी होंगे ना। आत्मा कोई विकारी थोड़े ही होगी। यहाँ अपन को हम विकारी और पतित क्यों बोलते हैं? तो ज़रूर हम आए हैं वहाँ से निर्विकारी आए हैं, पीछे हम पतित बने। कैसे पतित बने हैं, कैसे पावन बने हैं, वो तो किसको भी मालूम नहीं है। बाप बैठकर सब कुछ अच्छी तरह से समझाते हैं– ये तो भला समझो, जब कोई आते हैं वहाँ से, दूर देश से, तो ज़रूर आएँगे, तो ज़रूर पवित्र ही होंगे ना। पीछे ये अपवित्र कैसे हुई? और बरोबर भला दुनिया भी तो पवित्र थी। फिर ये पवित्र इतनी कितना थीं? जब पवित्र थे तभी तो 9 लाख थे, 10 लाख थे, 12 लाख थे। सभी इतनी की आत्मा कहाँ से आईं? ज़रूर कोई पवित्र दुनिया से आई होंगी ना। तो पवित्र शांतिधाम से आई हैं। उसको कहा ही जाता है–पीसफुल वर्ल्ड, इन्कार्पोरिअल। भई, पीसफुल होगा ना। कारपोरिअल हैं नहीं, तो इन्कार्पोरिअल, तब पीसफुल और पवित्र भी ज़रूर होंगे। तो अभी तुम बच्चों को ये मालूम होता है कि बरोबर ये सभी आत्माएँ वहाँ रहती हैं और पवित्र ही होती हैं। पीछे नम्बरवार आते, पार्ट बजाते–2 और फिर सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो उनको होना ही है। पुरानी दुनिया होनी है, तमोप्रधान होना ही है, पतित सबको होना ही है। तब बाप को आना होता है, सबको फिर पावन बनाना है, सबको वापस जाना है। एक ड्रामा बना है। ऑटोमैटिकली ये ड्रामा चलता है। बाप बैठ करके समझाते हैं कि ड्रामा ऐसे चलता है। समझे! चलती है, बनी–बनाई है चीज़, इसमें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है; पर समझावे कौन इस ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को? समझाना है भगवान को। भगवान को कोई जानते ही नहीं हैं बिल्कुल ही। जबकि शास्त्रों में लिख देते हैं कि ये ऋषि–मुनि जो होकर गए वो नेती–2 करते गए कि हम नहीं जानते हैं, नहीं जानते हैं। एक ये भगवान की रचना, ये कैसे चक्कर लगाती है, सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। हिस्ट्री और जॉग्राफी– वो हो गई रचना। रचना की भी आदि–मध्य–अंत ये कैसे फिरती है और रचता कौन है इनका, ये हमको जानता नहीं है, जो कोई हमको समझावे। अच्छा, फिर कहते भी हैं– गॉड फादर इज़ नॉलेजफुल। देखो, कहते भी हैं– ज्ञान का सागर है। कौन? परमपिता परमात्मा, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। समझा ना! तो मनुष्य सृष्टि का बीजरूप और आत्माओं का तो बाप वही है। तो आत्माओं का बाप, मनुष्य सृष्टि का फिर ये जो बीजरूप है। ये मनुष्य सृष्टि का है ना। वो आत्माओं का बीज, ये है मनुष्य सृष्टि का बीज। तो वो आ करके, फिर मनुष्य सृष्टि का जो बीज है, इसमें प्रवेश हो करके मनुष्यों को समझाते हैं मनुष्य द्वारा। पर वास्तव में वो आत्माओं का, उनको ऐसे भी नहीं कहा जाए कि मनुष्य सृष्टि का बीज है। नहीं–2, वो तो है ही आत्माओं का बाप, बीज। फिर है ब्रह्मा मनुष्य सृष्टि का बीज, जिस द्वारा फिर बाप आ करके मनुष्यों को ज्ञान देते हैं, आत्मा को ज्ञान देते हैं, पर शरीरधारी मनुष्यों को। तो मनुष्यों का शरीरधारी से तो दुनिया चलती है ना। सभी मनुष्य ही मनुष्य हैं ना बच्ची। सो मनुष्य यहाँ बना ही हुआ है दो चीज़– जीव और आत्मा। बस। शरीर और आत्मा। देखो, कहते भी हैं– शरीर अलग है, आत्मा अलग है। दूसरा कोई अक्षर ही नहीं है। आत्मा, उसमें समझने की मन–बुद्धि–चित् आत्मा में है। बस। ये साफ कह देते हैं। यहाँ तो शास्त्रों में बैठ करके– आत्मा का(के) मन को अलग, बुद्धि को अलग, बहुत करके बखेड़ा लिखा हुआ है। मनुष्य समझ नहीं सके। ... बात ही दो– आत्मा और ये शरीर। आत्मा आ करके शरीर में प्रवेश करके पार्ट बजाता है। छोटेपन से ही पार्ट उनका शुरू हो जाता है। भई, इसमें अभी आत्मा ने प्रवेश किया है तो चुर्रपुर्र कर रहे हैं। मालूम होता है ना सभी (...)। पार्ट बजाने के लिए। अभी तुम बच्चे इस ड्रामा के पार्ट को समझ गए। हर एक को पार्ट जमाना है। आज हमारी स्त्री है, पति है, पुरुष है, शरीर छोड़ते हैं। अभी तुम कहते हो– वो गया अपना दूसरा पार्ट बजाने के लिए,

हमको रोने की क्या दरकार है! उसका पार्ट ही बजाना, हमारे रोने से क्या वो फिर आएगा, अपना ये पार्ट बजाएगा क्या? कि हमारा काका, चाचा और मामा आकर बनेगा क्या? नहीं, गया मुर्दा सो गया। आएगा थोड़े ही जो उनका फिकर करें। वो गया सो जा करके दूसरे शरीर में प्रवेश किया। उनको पार्ट ही मिला हुआ है। वो तो बना–बनाया है पार्ट। ये सब तुमको समझाया जाता है, तभी तुम कभी भी बोलते हैं– तुमको रोने की क्या दरकार है? अम्मा मरे तब देखो। अभी तुमको बताया हुआ है कि तुम्हारी माँ, जिसको मम्मा–2 कहते थे, जिसके ऊपर बहुत वारी जाते थे, ये करते थे, अभी शरीर छोड़ दिया, क्या हुआ! वो ड्रामा के प्लैन अनुसार गई। वहाँ जा करके अपना पार्ट बजा रही है फलाना। अच्छा, वो तो वहाँ सूक्ष्मवतन में पार्ट बजा रही है। अरे, बहुत ही यहाँ से जाते हैं, कहाँ गए? गए जा करके, जिसको बुलाते हैं ना किस–2 को। गए, अरे भई कहाँ? वो समझ जाते हैं कि यहाँ का जैसा–2 अच्छा बच्चा होगा, जितना–2 कुछ समझदार होगा, इतना–2 अच्छे घर में जन्म ज़रूर लिया होगा यानी कर्म अच्छे करते रहते हैं ना, सो तो ज़रूर समझेंगे ना कि अच्छे (...)। कोई भी ऐसा यहाँ का ब्राह्मण का आदमी जाएगा, तो अच्छे घर में (...)। अभी अच्छे घर भी तो नम्बरवार हैं यहाँ। ऐसे तो नहीं, सभी अच्छे घर हैं। नहीं, जैसा–2 जो–2 यहाँ कर्म करते हैं, वो ऐसे ही कोई अच्छे घर में जाते हैं। तभी तो गाया जाता है ना– यहाँ के बच्चे, जब पिछाड़ी होती है, तब ये बच्चे जा करके, जो राजाएँ होते हैं ना, वो उनमें(उनके) घर में जन्म लेते हैं फिर; क्योंकि फिर राजा उनको बनना होता है। तो ये कौन जाकर राजा बनेगा, कौन राजा के घर में जाएगा, कौन फलाने के घर में जाएगा– ये भी तो समझ बाबा दे रहे हैं ना। ऐसे भी यहाँ हैं जो जा करके कोई चरिये–खरिये के पास, तो भी कुछ–न–कुछ अच्छे के पास जाएँगे। फिर भी तो संस्कार तो ले जाते हैं ना। फिर भी कुछ–न–कुछ दैवी संस्कार तो ले जाते हैं ना। तो भी कर्मों अनुसार फर्क तो है ना बच्ची। अभी जो जैसे कर्म करते रहते हैं, हम समझ सकते हैं कि कैसे–2 कोई अच्छे के पास जाकर जन्म लेते होंगे। जब तलक फिर वहाँ आवे, अपना प्रारब्ध का शरीर आ करके लेवे। तो इसमें बड़ी विशाल बुद्धि, बहुत विचार–सागर–मंथन करना होता है बच्चों को; क्योंकि बाप सिखलाते किसलिए हैं? कि विचार–सागर–मंथन करें, बुद्धि में धारण करें, समझें। जैसे बाप ज्ञान का सागर है तैसे बच्चों की आत्माओं को भी तो ज्ञान का सागर बनना है ना। हाँ, इतना ज़रूर है, (नंबर)वार बनते हैं। सो तो देखा ही जाता है– कौन क्या करते हैं, कौन क्या करते हैं ज्ञान का। आगे चल करके उन्नति तो होने की है। भले किसके ऊपर ग्रहचारी है। आज कुछ काम नहीं कर सकते हैं, कल बहुतों से तीखा भी चला जाए। पता है, कोई के ऊपर ग्रहचारी है, ग्रहचारी उतर जाए। ग्रहचारी बैठती है ज़रूर। इस कमाई में भी देखा गया है–राहू की ग्रहचारी बैठ जाती है। चलते–4 अगर राहू की ग्रहचारी, दूर गया गटर में एकदम। उसको समझना चाहिए– ये गया गटर में एकदम, ग्रहचारी पड़ी। वो हडगुड उनका टूट जाते हैं बहुत। वो एकदम चेहरा ही गंदा हो जाता। क्यों? बाप, बेहद का बाप, वो कह रहे हैं, उनसे अंजाम किया हुआ है; क्योंकि वो जानते हैं कि बाप और उनके साथ धर्मराज भी है। जैसा–2 जो कर्म करते हैं, फिर धर्मराज द्वारा उनको डण्डा मिलते हैं। ठीक है! जैसे ये गवर्मेण्ट है, तो उनके साथ वो जजमेण्ट भी है। जैसा–2 जो कर्म करते हैं उल्टा–सुल्टा, तो जाते हैं धर्मराज के पास, सरकार के पास। है ना! तो उनको हुकुम मिला हुआ है कि भई ..... जितना भी कोई पाप किया है, सज़ा दो। तो फिर वो तो बेहद की बात है ना। सो ये जानते भी बच्चे, बेहद का बाप और बेहद का फिर धर्मराज और फिर बेहद की सज़ा। जो कोई भी बेहद के बाप से ये आनाकानी या उल्टा–सुल्टा कर्म करेगा या वफादार न रहेगा, आज्ञाकारी न रहेगा; परन्तु सज़ा तो ज़रूर खाएँगे। तुम कण्टेम्प्ट ऑफ हाईएस्ट कोर्ट (न्यायालय की

अवमानना)। समझा ना! अगर तुम नहीं मानते हो और जो कहते हैं कि ये न करो और तुम करते हो तो पता है किसकी तुम अवज्ञा करते हो? कण्टेम्प्ट कहते हैं अवज्ञा को अंग्रेजी में। किसकी अवज्ञा करते हो? भगवान की अवज्ञा करते हो। वो भगवान का फिर धर्मराज है, वो डण्डा देने वाला है बड़ा ज़बरदस्त। तो बेहद का डण्डा; क्योंकि बेहद का बाप, बेहद का धर्मराज और वो जो तुम हैं सब हद का। तो इतना सब बाप बैठ करके समझाते रहते हैं कि श्रीमत के ऊपर चलो। उसमें भी नम्बरवन कि अभी बाबा को सर्विस में मदद करो, योग की यात्रा में रहो, ये सीढ़ी के ऊपर सब कुछ समझो यानी चित्रों के ऊपर समझो, विचार–सागर–मंथन करो– मुझे ऐसे किसको समझाना है, ऐसे किसको समझाना है, सो टेव पड़ जावे। समझाएगा ही नहीं तो टेव क्या पड़ेगी! फिर समझाएगा नहीं तो फिर पद कैसा ऊँचा मिलेगा! जो जास्ती समझाएगा, ऊँच पद मिलेगा। सो तो कोई गुप्त चीज़ थोड़े ही है। .....जैसे अज्ञानकाल में बच्चों का प्रत्यक्ष है। बच्चे घर में कोई अच्छा है, कोई बुरा है, कोई बच्चा बड़ा सपूत होता है। ये बच्चा बड़ा खिटखिट करने वाला, होता है ना। हूबहू यहाँ बाप भी सब कुछ देखते रहते हैं। कोई बच्चे बड़े अच्छे हैं। बस, बाबा ने कहा (और) झट हुकुम मिला और ये किया, ये किया। यहाँ तो कोई भी इस समय तक तो अभी ऐसा शिवबाबा का, लॉ जिसको कहा जाए, वो तो बड़ा कोई मुश्किल देखने में आता है। झट कोई–न–कोई ग्रहचारी लगती है ना बच्चों को। तो कभी देखो तो अच्छा, कभी देखो तो एकदम वो ठण्डा पड़ जाते हैं। नहीं तो सर्विस देखो कितनी बड़ी है! बेहद की सर्विस करनी है। बेहद दुनिया में चक्कर कैसे हम (...), बेहद बाबा के साथ बेहद दुनिया को हमको कल्याण करना है, ये पैगाम देने हैं। सो भी पैगाम कौन–सा? मन्मनाभव–मद्याजीभव। यानी अभी बाप को याद करो तो तुम्हारी जो तमोप्रधान बुद्धि है सो सतोप्रधान हो जावे। सो भी सबकी तमोप्रधान बुद्धि है ना बच्चे। सबको कहा जाता है कि भई, इस समय में देखते हो, तमोप्रधान हैं एकदम। कलहयुग है। कलहयुग भी एण्ड(end) है माना तमोप्रधान की भी एण्ड(end) है। अभी तुमको जाना है। सतोप्रधान बनना है। जबकि तुम वहाँ रहते हो, सतोप्रधान रहते हो। पीछे नम्बरवार तो हैं ना सतोप्रधान। सतयुग में सतोप्रधान जास्ती होंगे, त्रेता में कम। ऐसे–2 वहाँ जो आत्माएँ रहती हैं ना, नम्बरवार हैं ना बच्ची। जैसे वहाँ भी आत्माओं की नम्बरवार दुनिया बनी हुई है, जो फिर यहाँ आ करके नम्बरवार पार्ट बजाते हैं। इसलिए तो वो दिखलाते हैं ऊपर की निराकारी दुनिया भी कि कैसे नम्बरवार हैं और आएँगी भी नम्बरवार वहाँ से। तो नम्बरवार आएँगी, सो तो आएँगी ड्रामा के प्लैन अनुसार। अब सब बिचारे आत्माएँ आ करके अड़े हैं रावण के राज्य में, बहुत दुःख हुई हैं। सो भी कोई समझते थोड़े ही हैं बिचारे। नहीं–नहीं। उनको ये मालूम ही नहीं है– हम कोई दुखी हैं। कहते हैं– हम पतित हैं। मानते थोड़े ही हैं पतित। कहो तो सही किसको पतित, तो बिगड़ पड़े एकदम। नहीं तो, हैं तो सभी पतित...। भ्रष्टाचारी भी तो सब हैं ना बच्ची। अभी भ्रष्टाचारी के अर्थ को एक नहीं समझते हैं। भ्रष्टाचारी कहा ही उसको जाता है– जो मूत से पैदा होते हैं। मूत से जो पैदा होते हैं वो होते ही हैं विकारी और उनसे पाप ही होते हैं। जो योगबल से वहाँ होते हैं उनमें कोई भी पाप नहीं होते हैं। तो देखो, इसलिए ये भ्रष्टाचारी कहा ही जाता है, जो विख से पैदा होते हैं। ये किसको पता नहीं है। ये बाप समझाते हैं– ये है विषियस वर्ल्ड यानी वाइस–ज़हर से पैदा होते हैं और सतयुग में वाइसलेस है, विषियस है नहीं। तो फिर भ्रष्टाचारी हुआ ना। तो भ्रष्टाचारी के अर्थ को कोई समझते थोड़े ही हैं। न संन्यासी (...)। वो समझते हैं, ये भ्रष्टाचार तो सतयुग में...। उन बिगर कैसे वो, नगन होने बिगर कैसे वो, विख बिगर कैसे वो ...? अरे पर, तुम गाते हो ना–वाइसलेस। यहाँ कहते हो ना– निर्विकारी। फिर विकार वहाँ कहाँ से आया? स्वर्ग में विकार कहाँ से आया? निर्विकारी तो वो दुनिया, ये

विकारी दुनिया। तो कुछ भी नहीं समझते हैं। बस, जैसे एकदम पत्थर बुद्धि बिल्कुल ही। तभी ये चित्र भी बनाते हैं ना, हमको ये विख दो कि बस हमको विख–वाइस चाहिए। अक्षर ही ऐसा लिखो। 'मूत' अक्षर भी लिख दो। मूत चाहिए। 'विकार' अक्षर भी लिखो– विकार चाहिए। उसका अक्षर सब माना ही हुआ है। विकार को मूत भी कहो (और) ज़हर भी कहो, विख भी कहो, जो चाहिए सब अक्षर लिख देने हैं। यानी मनुष्य की बुद्धि में वो भी नहीं आते हैं कि विकार, वाइस– ये सभी एक ही अक्षर की माना वो भी बुद्धि में नहीं बैठेगा। हैं ही पत्थरबुद्धि बिल्कुल। सो भी जो ऊँचे–ते–ऊँच यहाँ गाए जाते हैं वो सब नीचे–ते–नीच हैं। तभी कहते हैं बाबा– अच्छा, ऊँचे–ते–ऊँच साधु हैं ना, अरे भई! इनका भी संग छोड़ो। इन्होंने तुमको डुबाया है। वो सबसे जास्ती हैं विपरीत बुद्धि; क्योंकि पत्थर–2, ठिक्कर–2 में (...), तो सबसे विपरीत बुद्धि हुई। विपरीत भी तोबा! बहुत गाली है, गुप्त गाली। इसको कहा जाता है–गुप्त गाली। मच्छ अवतार, कच्छ अवतार, फलाना अवतार– नाम देखो कितना बड़ा है! अरे, इसको फिर कहा ही जाता है– बड़े–ते–बड़ी गाली देते हैं। जैसे यहाँ मनुष्यों को देते हैं ना– ऐ कुत्ते का बच्चा, ऐ उल्लू का बच्चा, ऐ ऊँट का बच्चा, तैसे बाप कहते हैं– मेरे लिए कह देते हैं कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। तो अवतार जब वो तो कच्छ बनेगा, तो फिर बाल–बच्चे भी कच्छ के होंगे ना, मच्छ के होंगे ना। तो इतने मूर्ख बुद्धि हैं जो बिल्कुल ही, कुछ भी उनके समझ में नहीं है और अपन को .....कहलाते हैं– श्री–श्री 108 जगद्गुरु। चलो। अब ये मुरली तो चलती रहती है ना। ऐसे तो नहीं (...) चलती रहती है। कोई भी मुरली तुम लोग का ले करके, कोई से ले भी सकते हैं। बहुत ही हैं यज्ञ में जो ऐसे भी, पवित्र भी नहीं रहते हैं, एण्टी भी हैं, तो भी मुरली कोई–न–कोई हाथ से ले लेते हैं– अच्छा, हमको मुरली तो पढ़ने को दो। अच्छा भई, मुझे कॉपी तो करने दो। बहुत ले लेते हैं। तो कोई मना तो कोई को कर नहीं सकते हैं। मुरली तो कोई भी हाथ में ले सकते हैं। चाहे तुम मुरली हाथ में ले लेना, कोई बड़ी बात है ही नहीं। वो मुरली तो ली थी ना हाथ में, वो जो चीन की बात में कुछ बाबा ने समझाया था। पुलिस के हाथ में कैसे गई? तो ज़रूर कोई ट्रेटर होगा ना और उसने बताया होगा– देखो, ये कम्युनिस्ट है, ये फलाना। दुश्मन तो तुम्हारे बहुत हैं ना बच्ची। तुम्हारे बहुत, सारी दुनिया दुश्मन है। ... गाया जाता है कि सारी दुनिया तुम्हारी दुश्मन, तुम्हारी माँ दुश्मन बनेगी, तुम्हारा बाप दुश्मन बनेगा, तुम्हारा भाई दुश्मन बनेगा। भला सब तो अभी वो दुश्मन बनेंगे, तो गुरु तो पहले ही दुश्मन बनेंगे। सब दुश्मन बनेंगे। गवर्मेन्ट भी दुश्मन। जाएँ तो सही, कोई ऑफिस में बैठ करके ये बातें करें, सब बिगड़ जाएगा, उन बिचारी को हैरान करके नौकरी छुड़ाय ...। दुनिया के दुश्मन हो ना। सारी दुनिया का विनाश और तुम यहाँ बैठ करके ये बादशाही करेंगे, तो दुश्मन हुए ना। तुम सबका विनाश कराय और तुम यहाँ बादशाही लेते हो, तो दुश्मन नहीं हुए! ये तो हुआ नटशेल में। बरोबर बाप भी कहते हैं– बरोबर बच्चे, तुम जभी अपना राज्य ले लेंगे बाबा से, सतोप्रधान बन जाएँगे, तो फिर तुम राजा बन जाएँगे। बाकी तो सभी विनाश होने वाला ही है। तो वो समझते तो हैं ना– ये ब्रह्माकुमारियाँ, ये कहती हैं कि इस ज्ञान यज्ञ से ये ज्वाला प्रज्ज्व(लित), ये सारा दुनिया विनाश हो जाएगा। ये तो दुश्मन ठहरीं। मनुष्य यहाँ पीस प्राइज़ देते रहते हैं– जो भई पीस करेगा उनको इनाम मिलेगा। ये कहती हैं– ये तो विनाश ही होने का है ज़रूर। तो इसमें जब विनाश ही होने का है ज़रूर, सो ये तो कोई पाप नहीं है। ये तो गाया हुआ है बरोबर– ये महाभारत की लड़ाई है। उसमें सब खतम होते हैं। बाकी एक धर्म रहता है। रामराज्य रहता है। उसमें भी थोड़े मनुष्य होते हैं। चित्र दिखलाओ ना। रामराज्य में बोलो, इसमें कितने मनुष्य होंगे? ख्याल करो अभी। थोड़े होंगे ना। तो बरोबर इन्होंने राज्य तब किया जब और कोई हैं नहीं। तो और कोई नहीं हैं, सो उसके लिए तो लड़ाई है ना। और तो कोई लड़ाई है

नहीं। लड़ाई भी एक है, बड़ी प्रसिद्ध एकदम कि इन लड़ाई से अनेक धर्म विनाश और फिर बाप आ करके एक देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। जिस नरक के बाद स्वर्ग के दरवाज़े खुलते हैं, वैकुण्ठ के दरवाज़े खुलते हैं, ऐसे कहते हैं। गायन भी है। तो बच्चों को कितना समझाते हैं। बच्चों(बच्चे) यहाँ रहते हैं, बच्चों की बुद्धि में आता है कि बाबा कहते तो ठीक हैं– हम कुछ समझावें। हाँ, क्या करें! मुख से तो कुछ बोल नहीं सकते हैं। अरे अच्छा, दूसरा कुछ भी बोल सकते हैं। सबके लिए नहीं, कोई–2 (...)। अच्छा भला, ये तो जाकर बताओ ना– दो बाप हैं। एक बेहद का बाप है और एक हद का है। अभी ज़रूर हद का बाप तो पूरा होगा, फिर जभी बेहद का आते हैं तो ये भारत स्वर्ग बन जाता है और फिर लड़ाई हो जाती है, विनाश हो जाता है। इसलिए बाबा आकर कहते हैं– अब मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और तुम पावन बनकर आएँगे, फिर पावन दुनिया के राज्य करेंगे।...देते रहो, देते रहो, देते रहो। तुम सुनाते रहो। आगे चल करके सुनते रहेंगे। सुनते रहेंगे, आते रहेंगे। सुनते रहेंगे, आते रहेंगे। जो–2 भी फूल बनने वाले होंगे, पैगाम सबको देते जाओ। होंगे जो फूल यहाँ के वो आएँगे ज़रूर। असम्भव जो नहीं आवें। समझा ना बच्चे! तुम्हारे जो सूर्यवंशी–चंद्रवंशी घराने के हैं, जो अभी सभी पतित बन गए हैं, घास–फूस हो गए हैं, वो ज़रूर आ करके नम्बरवार अपना वर्सा लेंगे। फिर वही राजधानी स्थापन होगी। हाँ, जो अच्छे हैं सो पहले जाएँगे, पहले आएँगे यहाँ राज्य करने। जो पीछे आए सो पीछे आते जाएँगे, आते जाएँगे, आते जाएँगे। कई तो नई दुनिया में भी तो नहीं आएँगे ना। फिर त्रेता में भी तो आएँगे ना, जो यहाँ ज्ञान लेंगे। तो कितना ज्ञान लेंगे, तुम विचार तो करो। ऐसे मत समझो कि कोई हम प्रदर्शनी करते हैं तो कोई उठते नहीं। नहीं–2, अरे, राजाई के लिए कोई नहीं उठ सकते हैं, उसमें बड़ी महिमा है। देखो, यहाँ बैठे हुए हैं बाबा के पास, बाबा के पास बैठे हैं, राजाई की नसीब नहीं बिल्कुल ही। अच्छा चलो, टोली ले आओ। ....कोई है, किसमें खिर निकलता है, कागज़–टुकड़ी ले करके। बाबा जो रोज़ समझाते हैं, इसमें ये लिखो, ये लिखो। मैं बैठा हूँ, मेरे से मदद ले करके कागज़ भेज दो। वो झट समझ जाएँगे। वो जो उसमें लिखा हुआ है ना कि नहीं मूत देती है तो मार खाती है। वो भी एक चित्र उनके साथ ही बनाय देवें एकदम। मूत नहीं देती है तो ये माँ, ससूरा, फलाना, देवर वगैरह सब आ करके मारते हैं कि इनको मूत दो। ऐसे लिख दो। इसमें कोई नुकसान थोड़े ही है। तो सारा दिन बुद्धि चलनी चाहिए। बाकी एक ही काम– बस, ये भरा और ये बचा, उससे क्या! दस काम चाहिए एक का। (सतो)प्रधान, सतो,रजो,तमो। अभी सतोप्रधान केले होते हैं, जिसको मुरमुर हो जाती है, बड़े मीठे हो जाते हैं। उनमें भी क्वालिटी होती है। ऐसे होती है ना केले में। कोई डेढ़ रुपया दर्जन मिलता है, कोई रुपये मिलेंगे, तो कोई आठ आना मिलेंगे; क्योंकि वो सतोप्रधान है, वो सतो है, वो रजो है, तमो है। तो ये सतोप्रधान केले हैं। देखें, किसको दे रहे।

मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।